नगरीय समाजशास्त्र का क्षेत्र

UG SEMESTER –III, Core Course o6- Urban Sociology

Dr. Utpal Kumar Chakraborty
Department of Sociology
ABM College, Jamshedpur

नगरीय समाजशास्त्र का क्षेत्र

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि नगरीय समाजशास्त्र एक आधुनिक सामाजिक विज्ञान है, जो नगरीय जीवन के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों का अध्ययन करता है, जिसमें नगरीकरण, नगरवाद तथा नगरीय परिस्थितिशास्त्र प्रमुख है। वास्तव में नगरीय समाजशास्त्र मानवीय समाज के अतीत एवं भविष्य व भविष्य में होने वाले अनेकों परिवर्तनों का अध्ययन भी करता है। अतः आधुनिकीकरण की तरफ बढ़ते नगरीय जीवन को समझने के लिए यह विज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पार्क तथा बर्गेस ने नगरीय समाजशास्त्र के क्षेत्र को तीन तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया है–

1– परिस्थितिशास्त्र– नगरों में पायी जाने वाली भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों का अध्ययन इसमें किया जाता है। पार्क और बर्गेस ने इसे दो भागों में बाँटा है–मानव परिस्थितिशास्त्र तथा सामाजिक परिस्थितिशास्त्र। आज दोनों समाजशास्त्रियों का मानना है कि परिस्थितियाँ प्रत्येक स्थान में एक समान नहीं होती हैं तथा परिस्थितियाँ प्रत्येक स्थान में एक समान नहीं होती हैं तथा परिस्थितियाँ मानव व्यवहार, जीवनशैली तथा सामाजिक सम्बन्धों को सर्वाधिक प्रभावित करती है।

2– सामाजिक संगठन– नगरीय समाजशास्त्र में सामाजिक संगठन एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। पार्क तथा बर्तस का मानना है कि नगरीय सामाजिक संगठन, ग्रामीण सामाजिक संगठन से पूर्णतया भिन्न है। अतः उनके बारे में जानना अत्यंत आवश्यक है। सामाजिक संगठन के अंतर्गत प्राथमिक तथा द्वितीयक समूह जो सामाजिक संगठन को व्यवस्थित रखने में अपना सहयोग देते हैं, को अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है। इसके अलावा इसके अन्तर्गत विभिन्न वर्ग, परिवार, जाति, सामाजिक संस्थाएं, आर्थिक तथा मनोरंजनात्मक व राजनैतिक संस्थाओं का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।

3–सामाजिक विघटन– नगरीय जीवन वृहद होने के कारण अनेक विघटन शक्तियों को बढ़ाने का कार्य करता है। अतः नगरीय समाजशास्त्र में विघटनकारी शक्तियों का अध्ययन किया जाता है। प्रमुख विघटनकारी शक्तियों मे जैसे–अपराध, मलिन बस्तियाँ, नशाखोरी, वैश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति, भ्रष्टाचार, पारिवारिक तनाव एवं संघर्ष व विवाह–विच्छेद आदि का अध्ययन नगरीय समाजशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है।

पार्क तथा बर्गेस के अतिरिक्त अनेक समाजशास्त्रियों ने नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र को अनेक भागों में विभक्त किया है–

1– सामुदायिक जीवन का अध्ययन– नगरीय समाजशास्त्र में नगर की सरंचना तथा नगरीय जीवन के सामाजिक संबंधों एवं कार्यात्मक विभाजन का अध्ययन किया जाता है

2– संगठनात्मक पक्षों का अध्ययन– नगरीय समाजशास्त्र के अन्तर्गत प्राथमिक तथा द्वितीयक सामाजिक संगठनों का सविस्तार अध्ययन किया जाता है।

3– जीवन पद्धति का विश्लेषण– नगरीय जीवन शैली नगरीकरण का परिणाम मानी जाती है जो पूर्णतया ग्रामीण जीवन शैली से विपरीत है। नगरीय जीवनशैली, वेशभूषा, व्यवहार करने का तरीका, भाषा शैली इत्यादि का अध्ययन नगरीय समाजशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है।

4– आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन का अध्ययन– नगरीय समाज में आर्थिक अर्थ व्यवस्था को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। जिसमें अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार उद्योग–धंधे होते हैं जिसके परिणामस्वरूप नगरीय गतिशीलता को बढ़ावा मिला है। इसी प्रकार नगर राजनीतिक केन्द्र होने के कारण नगरीय समाज के प्रत्येक परिप्रेक्ष्य को भी प्रभावित करता है। अतः नगरीय समाजशास्त्र में नगरीय आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन का अध्ययन किया जाता है।

5–नगरीय समस्याओं का अध्ययन– नगर तथा नगरीकरण से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का अध्ययन भी नगरीय समाजशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है।

6– सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन– सामाजिक प्रक्रियायें, सामाजिक संगठन एवं समाज को व्यवस्थित रखने में अपनी प्रमुख भूमिका का निर्वह्न करते हैं। नगरीय सामाजिक प्रक्रियाओं में सहयोगी, असहयोगी, विभेदीकरण तथा प्रतिस्पर्धा आदि प्रमुख हैं। जिन्हें नगरीय समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नगरीय समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। जैसे–जैसे नगर, नगरों के आकार, सामाजिक संरचना, विभिन्न परिप्रेक्ष्य सामाजिक समस्याओं का क्षेत्र विस्तृत होगा, वैसे–वैसे नगरीय समाजशास्त्र का क्षेत्र भी विस्तृत होता जायेगा।